श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित
श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में

31 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, 03 अगस्त से मंगलवार, 12 अगस्त, 2008 तक)

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में रविवार, 03 अगस्त से मंगलवार, 12 अगस्त 2008 तक 31 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है।

शिविर में अध्यात्मजगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अमितजी मोदी विदिशा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिलेगा।

साथ ही श्री टोडरमल दि. जैन सि. महा. के डॉक्ट्रेट (पीएच. डी. उपाधि प्राप्त) स्नातकों के व्याख्यानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी को धर्मलाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 301 अंक : 1

विकलपता मिट जाय है..

मोहि कब ऐसा दिन आये है।। टेक ।।
सकल विभाव अभाव होहिंगे,
विकलपता मिट जाय है।। मोहि.।।
यह परमातम यह मम आतम,
भेदबुद्धि न रहाय है।
औरनि की का बात चलावै,
भेद-विज्ञान पलाय है।। मोहि.।।
जानैं आप आप मैं आपो,
सो व्यवहार विलाय है।
नय परमान निखेपन माहीं,
एक न औसर पाय है।। मोहि.।।
दरसन ज्ञान चरन के विकलप,
कहो कहाँ ठहराय है।
'द्यानत' चेतन चेतन ह्वै है,
पुद्गल, पुद्गल धाय है।। मोहि.।।

ह्न कविवर पण्डित द्यानतरायजी

पुद्गल का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 27 वीं गाथा के बाद समागत 41 वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है ह्न

(मालिनी)

अथ सति परमाणोरेकवर्णादिभास्वन्
निजगुणनिचयेऽस्मिन् नास्ति मे कार्यसिद्धि:।
इति निज हृदि मत्त्वा शुद्धमात्मानमेकम्
परमसुखपदार्थी भावयेद्भव्यलोक: ॥41॥

यदि परमाणु एकवर्णादिरूप प्रकाशते (ज्ञात होते) निजगुण समूह में हैं तो उसमें मेरी कोई कार्यसिद्धि नहीं है अर्थात् परमाणु तो एक वर्ण, एक गंध आदि अपने गुणों में ही है तो फिर उसमें मेरा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता ह्न इसप्रकार निजहृदय में मानकर, परमसुख पद का अर्थी भव्य समूह एक शुद्ध आत्मा को भाये।

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : भव्यजीवों को कल्याण करना हो, धर्म करना हो तो क्या करना चाहिए ?

उत्तर : भव्यों के समूह को एक शुद्धात्मा को भाना चाहिए। अहा ! अन्दर आत्मा आनन्दमूर्ति प्रभु है, उसका भजन अर्थात् उसमें एकाग्रता करना चाहिए।

प्रश्न : पहले जानना तो चाहिए न कि शुद्धात्मा कैसा है ?

उत्तर : हाँ भाई ! शुद्धात्मा क्या है ? पर्याय क्या है ? राग क्या है ? संयोग क्या है ? ह्न यह सब सुखार्थी को जानना पड़ेगा; क्योंकि नवतत्त्वों की भिन्नता जाने बिना एक शुद्धात्मतत्त्व में कैसे आयेगा ? भाई ! बात बहुत सूक्ष्म है। सच्चिदानन्द स्वभावी अपने आत्मा का ध्यान छोड़कर इसने अन्य ध्यान तो अनन्तबार किये हैं; परन्तु उससे कुछ लाभ नहीं हुआ और चौरासी के जन्म-मरण ज्यों के त्यों चलते रहे।

इसने अनन्तबार भव-भव में जिनवर की पूजा की है; परन्तु ये सब तो राग था, इसमें धर्म कहाँ था ? सम्यग्ज्ञानदीपिका की भूमिका में भी आता है कि साक्षात् तीर्थंकर

भगवान जब समवशरण में विराजमान थे, तब इसने अनन्तबार मणिरत्न के दीपक, हीरों के थाल और कल्पवृक्षों के पुष्पों से भगवान की पूजा की; तथापि उससे आत्मा का कुछ हित नहीं हुआ; क्योंकि वह शुभराग है, शुभ विकल्प है, पुण्य है; धर्म नहीं है। यह बात कठोर होने पर भी सत्य तो यही है।

कितने ही दया-दान, व्रत और तप करके धर्म मानते हैं तो कितने ही भगवान और गुरु की भक्ति से धर्म मानते हैं; परन्तु वे सब मिथ्यादृष्टि विपरीत मार्ग पर हैं।

भाई ! अज्ञानी बहुत भक्ति, उपवास और तप करके सूख जाये तो भी उसमें किंचित् कुछ नहीं होता, यह तो बड़ी मजदूरी है।

भगवान त्रिलोकीनाथ सर्वज्ञ परमेश्वर कहते हैं कि जो भव्यसमूह जीव हैं, वे एक शुद्धात्मा को भावे अर्थात् जिसमें अनन्त शक्ति, अनन्त शांति, आनन्द आदि अपरिमित गुण पड़े हैं ह्न ऐसे भगवान में अन्तर-एकाग्र होकर उस एक की भावना करे, इसी का नाम धर्म है और यही मुक्ति का उपाय है।

अहा ! इसने ऐसे ही चार गतियों में भ्रमण करते हुये अनन्तकाल व्यतीत किया है; धर्म केनाम पर अधर्म का सेवन किया है और उसमें धर्म माना है। इसको वास्तविक धर्म तो सुनने को भी नहीं मिला । 'भगवान की भक्ति करो और भक्ति करते-करते धुन लगाओ' ह्न जगत में तो यही सुनने को मिलता है; परन्तु भाई ! भगवान की भक्ति की धुन लगाना तो राग की धुन है।

अहा ! अन्दर आत्मा एकरूप सच्चिदानन्द प्रभु है। स्वयं शक्ति से भरपूर पूर्णस्वरूप है, अतीन्द्रिय आनन्द का धाम है; अत: अन्तर्दृष्टि करके, उसकी एकाग्रता की भावना करने का नाम मुक्ति का उपाय है और यही धर्म है।

जगत को कठिन लगे ऐसी बात है; परन्तु देखो न ! मुनिराज ने कितनी स्पष्ट बात की है ह्न **शुद्धमात्मानमेकम् परमसुखपदार्थी भावयेद्भव्यलोक:** इतने में तो कितना भर दिया है।

धनादि में सुख माननेवाला तो मूढ़ है; उस धूल में सुख कहाँ है ? क्या पैसे में, स्त्री में, प्रतिष्ठा में सुख है ? नहीं; क्योंकि वे सब तो जड़ हैं; तथापि अज्ञानी ने उनमें सुख की कल्पना की है, यह मूढ़ता है। सुख तो भगवान आत्मा में त्रिकाल विद्यमान है। इसलिये अतीन्द्रिय सुख और आनन्द का अर्थी भव्यसमूह एक शुद्धात्मा को भावे। भव्यसमूह कहकर समस्त भव्यजीव कहा है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

मिथ्यात्वादि के त्याग का उपदेश

ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञानचरण, वश भ्रमत भरत दु:ख जन्म मरण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहूँ बखान।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

इस छहढाला में सबसे पहले वीतरागविज्ञान को नमस्कार करके मंगल किया, और उसीको सर्वोत्कृष्ट बतलाया। ऐसे वीतराग विज्ञान के अभाव में जीव ने चार गति में कैसे कैसे दु:ख भोगे उसका वर्णन पहली ढाल में किया। अब इस दूसरी ढाल में चार गति के दु:खों के कारणरूप जो मिथ्याश्रद्धा, मिथ्याज्ञान और मिथ्याआचरण हैं; उनका स्वरूप पहचान करके उनको छोडने का उपदेश देते हैं।

जीव मिथ्यात्व के सेवन से ही दु:खी है। शरीर का छेदन-भेदन या शीत-उष्णता आदि संयोग से चार गति के दु:खों का कथन किया; किन्तु उसमें दु:ख का सच्चा कारण बाह्यसंयोग नहीं है; अपितु मिथ्याश्रद्धा, मिथ्याज्ञान और मिथ्याआचरण ही कारण हैं। यह समझकर मिथ्यात्वादि का त्याग करना चाहिए। मिथ्यात्व भाव जीव को दु:ख देनेवाला महान शत्रु है । इस मिथ्यात्वादि शत्रु से आत्मा के स्वभाव का रक्षण करने के लिये वीतराग-विज्ञान मजबूत ढाल है।

निगोद से लेकर नववें ग्रैवेयक तक के चारों गति के अवतार में जीव ने जो-जो दु:ख भोगे हैं, वे मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-चारित्र के सेवन से ही भोगे हैं और ऐसा नहीं है कि मात्र नरक के ही अवतार में दु:ख भोगे, स्वर्ग का अनन्त अवतार किया, उसमें भी दु:ख ही भोगे हैं। जहाँ सम्यग्दर्शनादि हैं, वहीं सुख है; और जहाँ मिथ्यात्वादि हैं, वहाँ दु:ख ही है; - चाहे नरक हो, चाहे स्वर्ग हो। तिर्यंच में या नरक में, स्वर्ग में या मनुष्य में, सर्वत्र दु:ख का कारण तो जीव के मिथ्यात्वादि भाव ही हैं। उन मिथ्यात्वादि भावों के वश होकर जीव चार गति में रुलता है और महान दु:खों को भोगता है। उसके दु:ख सर्वज्ञ ने जैसे देखे हैं, उसी के अनुसार यहाँ कुछ कथन

किया। अनन्त दुःखों का वर्णन कहाँ तक किया जाय?

जीव निगोद में भी अपने मिथ्यात्ववश ही रहा है, अन्य किसी कारण से नहीं। श्री गोम्मटसारजी की गाथा १९७ में कहा है कि "**भावकलंक सुपउरा निगोदवासं ण मुचंति**" अर्थात् भावकलंक की अत्यन्त प्रचुरता होने से वे जीव निगोदवास को नहीं छोड़ते। जीव को अपना मिथ्यात्वभाव ही दुःखरूप है; कर्म तो जड़ है, वह तो मात्र निमित्त हैं, जीव से भिन्न है। भाई ! तेरे उल्टे भाव के अनुसार ही कर्म बँधे हैं; अतएव परिभ्रमण का मूल कारण तेरा उल्टा भाव ही है। अपने उल्टे भाव को छोड़ तो तेरा भ्रमण मिटे। सम्यग्दर्शन के बिना जीव का परिभ्रमण कभी नहीं मिटता। हे जीव मिथ्यात्व के सेवन से जन्म-मरण का बहुत दुःख तू भोग चुका, अब तो उस मिथ्यात्वादि को छोड़... छोड़ !

जीव ने दयादि के शुभभाव से स्वर्ग का भव भी अनन्तबार प्राप्त किया एवं हिंसादि के तीव्र पाप करके नरक में भी अनन्तबार जा चुका है; किन्तु शुभ-अशुभ दोनों से पार निज-स्वरूप की पहचान नहीं की। देह में और राग में एकत्वबुद्धि होना मिथ्यात्व है - ऐसा जानकर उसे छोड़ना चाहिए। दुख के कारणरूप इन मिथ्यात्वादि का स्वरूप पहिचानकर उनका त्याग करने के लिये संक्षेप में इस अध्याय में कहेंगे।

अज्ञानी संयोगबुद्धि से दुःखी हो रहा है; संयोग यदि अनुकूल हो तो अच्छा और प्रतिकूल हो तो बुरा - ऐसी मिथ्याबुद्धि दुःख का मूल है। नरकादि के दुःखों के कथन में संयोग के निमित्त से बात की है; परन्तु वास्तव में प्रतिकूल संयोग दुःख नहीं है, जीव का मोहरूप आकुलभाव ही दुःख है।

जीव ने मिथ्यादृष्टिपने में निगोद से लेकर नवमें ग्रैवेयक तक के अवतार अनन्तबार किये, उनमें सामान्यतया सबसे कम भव मनुष्य के किये, यद्यपि वे भी अनन्त किये; किन्तु अन्य गति की अपेक्षा से वे कम हैं; उनसे असंख्यातगुणे नरक के भव किये; उनसे असंख्यातगुणे देव के भव किये और उनसे अनन्तगुणे भव तिर्यंच गति में किये; सिद्धपद इस जीव ने पूर्व में कभी भी प्राप्त नहीं किया। संसार का अनन्तकाल तो ऐकेन्द्रियपन के महान दुःख में बिताया। उस वक्त जीव को

किसी प्रकार की विवेक बुद्धि ही नहीं थी; उसकी चेतना इतनी हीन हो गई थी कि सिर्फ इतना ही बाकी रहा कि वह जड़ न हो गया। अब तो जीव को चेतने का अवसर आया है; अतः घोर दुःख के कारणरूप मिथ्यात्वादि को जानकर उनको सर्वथा छोड़ना चाहिए। मिथ्यात्व को मिथ्यात्वरूप से जो पहचाने भी नहीं, वह उसका त्याग कैसे करेगा? इसलिये कहा कि "**इनको तजिये सुजान**" अर्थात् उन मिथ्यात्वादि दुश्मनों को अच्छी तरह जानकर उनका त्याग करो। मिथ्यात्व का अंश भी बुरा है; अतः उसका निर्मूल नाश करना चाहिए।

उसका नाश करने के लिए यहाँ उसका स्वरूप दिखलाते हैं; मिथ्यात्व में कैसी-कैसी विपरीत मान्यताएँ होती हैं ह्न यह जानकर, अपने में ऐसी कोई मान्यता हो तो छोड़ देना चाहिए। बड़े-बड़े आचार्यों ने शास्त्रों में जो विस्तृत वर्णन किया है, उसी के अनुसार यहाँ संक्षेप में कहा जायेगा। यह समझकर मुमुक्षु को सम्यक्त्व का सेवन करना और मिथ्याभावों का सेवन छोड़ना चाहिए।

भाई ! तेरे दुःख की कथा तो इतनी बड़ी है कि उसे पूर्णतः केवली भगवान ही जानते हैं; कथन में तो अल्प ही आता है। मिथ्यात्वादि भाव तुमने सेये और उनके सेवन से तुम कैसे दुःखी हुए ? - यह बात सुनो ! सुनकर अब उनका सेवन छोड़ दो। तुमको किसी दूसरे ने नहीं रुलाया; किन्तु अपने मिथ्यात्वभाव से ही तुम रुले और दुःखी हुए। मिथ्यात्व और राग-द्वेष दुःख के कारण हैं। राग अशुभ हो या शुभ, दोनों में दुःख है। शुभ से भले स्वर्ग मिले; किन्तु वह भी दुःख है। शुभराग से स्वर्ग मिल जाय; किन्तु शुभराग से आत्मा नहीं मिल सकता अथवा आत्मा के सम्यग्दर्शनादि कोई गुण शुभराग से नहीं मिलते। राग तो स्वयं दोष है, उसके द्वारा गुण की प्राप्ति कैसे हो ? मिथ्यात्व और राग स्वयं ही दुःख है, उसका फल भी दुःख है, तब फिर वह मोक्ष-सुख का कारण कैसे हो सकता है? किन्तु अज्ञानी उसको सुख का कारण समझ रहा है। जो वीतराग-विज्ञान है, वह सुख है; जो राग-द्वेष-अज्ञान है, वह दुःख है ह्न ऐसा जानकर हे जीव ! दुःख के कारणों से तू दूर हट जा और सुख के लिये वीतराग-विज्ञान को प्रकट कर। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : यदि ज्ञान और आत्मा दोनों एकसाथ जानने में आते हैं तो फिर ज्ञान और आत्मा का भेद तो व्यर्थ हो गया ?

उत्तर : अभेद की ओर ढलने पर भेद को उपचार से साधन कहा जाता है। अभेद के लक्ष्य बिना अकेला भेद तो सचमुच व्यर्थ ही है। अभेद में जाते-जाते बीच में भेद आ जाता है, परन्तु उस भेदरूप व्यवहार का निषेध करके अभेद में ढलना होता है; अत: उस भेद को व्यवहार-साधन कहा जाता है। निश्चय बिना अकेला व्यवहार तो व्यर्थ ही है। प्रथम ज्ञान को जाना, पश्चात् आत्मा को जाना ह्न ऐसा भी वास्तव में है नहीं।

जब तक यह लक्षण और यह लक्ष्य ह्न इसप्रकार दो भेदों के ऊपर लक्ष्य रहे; तब तक विकल्प की ही प्रसिद्धि है; आत्मा की नहीं। आत्मा की ओर बढ़कर जब आत्मा की प्रसिद्धि हुई, अनुभव हुआ; तब लक्ष्य और लक्षण ह्न ऐसे दो भेदों पर लक्ष्य नहीं रहता और दोनों अभेद होकर एकसाथ प्रसिद्ध होते हैं; भेद व्यवहार तो अभेद आत्मा का प्रतिपादन करने के लिये है।

प्रश्न : पर्याय में प्रभुता कैसे प्रगट हो ?

उत्तर : तू रागादि से निर्लेपस्वरूप प्रभु है। कषायोत्पत्ति हो, उसे मात्र जानना ही तेरी प्रभुता है। कषाय में एकत्वबुद्धि करके निजत्व स्थापित करना तेरी प्रभुता नहीं है। भाई ! तू निर्दोष वस्तु है ह्न तुझे कषाय का लेप लगा ही नहीं है। आत्मा तो सदा ही कषायों से निर्लिप्त है। जैसे स्फटिकमणि में पर का प्रतिबिम्ब पड़ता है, वैसे ही कषायभाव ह्न विभावभाव ज्ञान में आते-जाते हैं; वे तेरे में प्रविष्ट नहीं हो जाते, तू तो निर्लेप है। व्रतादि के विकल्प आते हैं, वे तो इस ज्ञायक से भिन्न संयोगी भाव हैं, ज्ञायक की जाति के नहीं हैं; अत: कुजाति हैं, परजाति हैं, परज्ञेय हैं, स्वजाति या स्वज्ञेय नहीं। तू ज्ञायकस्वरूप निर्लेप प्रभु है। इस प्रभुता का अन्दर से विश्वास करने पर पर्याय में प्रभुता प्रगट होती है।

समाचार दर्शन ह्न

हाडौती, मेवाड़ एवं म.प्र. के ४३ स्थानों पर एक साथ ह्न

व्यक्तित्व विकास ग्रुप शिविर एवं युवा फैडरेशन कोटा का सम्भागीय सम्मेलन

कोटा (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन सम्भाग कोटा द्वारा संचालित एवं कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम कोटा द्वारा आयोजित जैन दर्शन एवं व्यक्तित्त्व विकास शिविर हाड़ौती मेवाड़ क्षेत्र के ४३ स्थानों पर ७ से १५ जून, ०८ तक आयोजित किया गया। प्रान्तीय उपाध्यक्ष पण्डित रतन चौधरी ने उक्त जानकारी देते हुये बताया कि इस शिविर में लगभग ३००० बालकों एवं ५ हजार साधर्मीजनों ने लाभ लिया। पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के निर्देशन में ७० विद्वानों ने उक्त शिविर के माध्यम से ज्ञानगंगा प्रवाहित कर धर्म प्रभावना की।

शिविर के समापन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडेरशन के सम्भागीय सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रदेशाध्यक्ष डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल अजमेर ने ग्रुप शिविरों की अगली कड़ी आँगनबाड़ी योजना शुरु करने की घोषणा की। जिसमें २ से ५ वर्ष तक के बच्चों को संस्कारित किया जायेगा।

फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में फैडरेशन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के इसीप्रकार प्रगतिपथ पर चलते रहने की भावना व्यक्त की।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रकुमार जैन ने कहा कि फैडरेशन की अनेक नवीन योजनाओं और कार्यप्रणाली प्रशिक्षण हेतु २० जुलाई, ०८ को किशनगढ़ (अजमेर) में शिविर आयोजित किया जा रहा है। विशिष्ट अतिथि बूंदी विधायिका श्रीमती ममता शर्मा ने बाल एवं युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुये भविष्य में पुन: ऐसे शिविर आयोजित करने की प्रेरणा दी।

मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी जैन ने शिविर की उपयोगिता पर बल देते हुये प्रतिवर्ष ऐसे शिविर गाँव-गाँव में लगाने की भावना व्यक्त की।

इसी अवसर पर मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी बजाज ने दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय प्रारम्भ करने की घोषणा की । महाविद्यालय के प्राचार्य पं.मनीषकुमारजी शास्त्री ने इस संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कोटा फैडरेशन के अध्यक्ष एवं शिविर के महामंत्री श्री तेजमल पटवारी ने धन्यवाद ज्ञापन तथा पं. अजितजी शास्त्री अलवर ने सभा का संचालन किया।

टोडरमल स्मारक में धर्म प्रभावना

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक १ जुलाई से ८ जुलाई तक देवलाली से पधारे ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' के प्रवचन एवं कक्षाओं द्वारा विशेष धर्म प्रभावना हुई। आपके द्वारा प्रतिदिन दोनों समय प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्व प्रज्ञापन पर प्रवचन एवं दोपहर में परीक्षामुख विषय पर कक्षा का उपस्थित जन समुदाय ने भरपूर लाभ लिया।

मेरठ संभाग के १६ स्थानों पर एक साथ ह्न

ग्रुप शिविर का भव्य आयोजन

मेरठ (उ.प्र.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ शाखा के प्रयासों से दिनांक 8 से 15 जून, 2008 तक पश्चिमी उत्तरप्रदेश के 16 स्थानों पर एक साथ जैनत्व संस्कार शिविर का सफल आयोजन अनेक उपलब्धियों सहित हुआ।

प्रमुख उपलब्धियाँ ह्न

* सरधना में फैडरेशन की नई शाखा की स्थापना
* कांधला में फैडरेशन की शाखा का पुनर्गठन
* कांधला में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का गठन
* बावली ग्राम में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का शुभारंभ

अनेक उपलब्धियों सहित इस शिविर को सफल बनाने में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, मंगलायतन एवं ध्रुवधाम बांसवाडा के 25 विद्वानों का अमूल्य सहयोग मिला।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 7 जून को श्री दिगम्बर जैन मन्दिर तीरगरान में श्रीमती कंचन जैन ध.प. श्री मूलवर्धन जैन सर्राफ के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री अनिल जैन दास द्वारा झण्डारोहण किया गया। शिविर का आयोजन निम्न स्थानों पर हुआ ह्न

मेरठ में विद्वान पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी तथा शिविर संयोजक श्री पंकज जैन थे। **मवाना** में विद्वान श्री श्रेयांस जैन एवं श्री विवेक जैन तथा शिविर संयोजक श्री सोनू जैन थे। **खतौली** में विद्वान श्री अभिषेकजी जैन सिलवानी तथा शिविर संयोजक श्री कल्पेन्द्र जैन थे। **मुजफ्फरनगर** में विद्वान श्री अभिषेक जैन कोलारस तथा शिविर संयोजक श्री मधुबन जैन थे। **हरिद्वार** में विद्वान श्री रजत जैन भिण्ड एवं श्री वीरेन्द्र जैन वीर तथा शिविर संयोजक श्री बालेश जैन थे। **विकासनगर** में विद्वान श्री विक्रान्त जैन भगवां एवं श्री आशीष जैन भगवां तथा शिविर संयोजक श्री हरीशचन्द्र जैन थे। **सहारनपुर** में विद्वान पण्डित शाकुल शास्त्री मेरठ, श्री रविन्द्र जैन बकस्वाहा एवं श्री पुलकित जैन तथा शिविर संयोजक श्री प्रमोदकुमार जैन थे। **रामपुर मनिहारन** में विद्वान श्री शैलेष जैन खतौली तथा शिविर संयोजक श्री भूपेन्द्र जैन थे। **कांधला** में विद्वान श्री गौरव जैन बावली एवं श्री पंकज जैन तथा शिविर संयोजक श्री गुनपाल जैन थे। **बावली** ग्राम में विद्वान श्री आशीष जैन सिलवानी एवं श्री विवेक जैन शाहगढ तथा शिविर संयोजक श्री नरेन्द्रकुमार जैन थे। **छपरौली** में विद्वान श्री अनेकान्त जैन दलपतपुर एवं श्री समकित जैन कोटा तथा शिविर संयोजिका श्रीमती ऊषा जैन थीं। **बड़ौत** में विद्वान श्री ऋषिकेश जैन एवं श्री अनेकान्त जैन तथा शिविर संयोजक श्री आनंद जैन थे। **खेकड़ा** में मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में शिविर का आयोजन हुआ।

सभी स्थानों पर प्रतिदिन पूजन-विधान, बालकक्षा, प्रौढ कक्षा, प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सुन्दर आयोजन हुआ।

उदयपुर संभाग के तीन जिलों में २३ स्थानों पर एक साथ ह्न

ग्रुप शिविर सम्पन्न

लूणदा (राज.) : यहाँ स्व.श्रीमती सौभागबाई किकावत की पुण्य स्मृति में संस्थापित शाश्वत चेरिटेबल ट्रस्ट लूणदा द्वारा ग्रुप-शिविरों की शृंखला में इस वर्ष दिनांक 1 से 8 जून,08 तक उदयपुर संभाग के तीन जिलों में 23 स्थानों पर एक साथ शिविरों का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 40 विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। उद्घाटन का कार्यक्रम सभी स्थानों पर अपने-अपने स्तर पर किया गया।

इस अवसर पर यहाँ 20 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित रमेशचंदजी जयपुर व पण्डित निशांतजी ध्रुवधाम के प्रवचन व कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। विधि-विधान के कार्यक्रम पण्डित सचिन शास्त्री गढ़ी के सहयोग से सम्पन्न हुये।

शिविर में लगभग 1500 लोगों ने धर्मलाभ लिया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम व पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर के निर्देशन में पण्डित अंकित शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह ह्न दिनांक 8 जून को लूणदा में विशाल स्तर पर शिविर का समापन समारोह सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री श्याम एस. कस्तूरचंदजी सिंघवी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री भागचंदजी कालिका उदयपुर, श्री महिपालजी ज्ञायक बाँसवाड़ा व श्री विनोदकुमारजी सूरत मंचासीन थे।

इसी अवसर पर प्रदेश युवा मण्डल का अधिवेशन भी आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता युवा फैडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल अजमेर ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

कार्यक्रम में 23 स्थानों के प्रथम व द्वितीय रहे छात्रों को विशिष्ट पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि यह सम्पूर्ण शिविर शाश्वत चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक चांदमलजी ललितकुमारजी किकावत परिवार लूणदा द्वारा आयोजित हुआ।

वैराग्य समाचार

१.रावटी (म. प्र.) निवासी सेठ श्री कनकमलजी जैन का दिनांक २९ मई, ०८ को आकस्मिक निधन हो गया। आप अत्यंत तत्त्वरुचिवंत थे और जयपुर के प्रत्येक शिविर में पधारते थे। आशुकवि भी थे।

२. नागपुर निवासी श्री विश्वलोचनजी जैनी के बड़े भाई **श्री निर्मलकुमारजी जैनी** का ७९ वर्ष की आयु में दिनांक ३० जून को सक्रिय अवस्था में देहावसान हो गया है। आप मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष थे तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुडे हुये थे। आपके निधन से नागपुर जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, उदयपुर की पहल

हिंसा पर अहिंसा प्रेमियों की जीत

उदयपुर की प्रसिद्ध बड़ी तालाब झील में पर्यटकों के माध्यम से **गेमबीट योजना** के अनुसार मछलियाँ पकड़वाने का ठेका दिया जाने वाला था; परन्तु इस समाचार को पढकर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-उदयपुर के कार्यकत्ताओं ने उदयपुर में **सर्वप्रथम** सरकार की इस गेम बीट योजना के विरोध में आवाज उठाई तथा जिला कलेक्टर आलोकजी तथा अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट राजीवजी को ज्ञापन सौंपा ।

फैडरेशन की सक्रियता ने पूरे उदयपुर में गेमबीट योजना के विरुद्ध माहौल बनाया। फैडरेशन के कार्यकत्ताओं ने माननीय गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया से भेंट की ।

जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने गृहमंत्री के समक्ष उदयपुर की सभी झीलों को अभयारण्य की तर्ज पर अभय झीलें घोषित करने की मांग रखी। ज्ञापन में उन्होंने कहा कि वीर भूमि मेवाड जहाँ निहत्थों पर वार करने की परम्परा नहीं है, ऐसे क्षेत्र में पर्यटन को बढावा देने के लिये सरकार द्वारा चलायी जानेवाली गेमबीट (हिंसक) योजना किसी भी रूप में उचित नहीं है। हमें ऐसे पर्यटकों की आवश्यकता नहीं है, जो अपने मनोरंजन के लिये मछलियाँ पकडने अथवा जीव हत्या में रुचि लेते हों।

फैडरेशन सदस्यों ने प्रदर्शन के साथ ही चेतावनी देते हुये कहा कि जबतक यह योजना निरस्त नहीं होगी, तब तक हम सभी भूख-हड़ताल पर रहेंगे।

हर्ष का विषय है कि दिनांक १७ जून को सरकार ने जैन युवा फैडरेशन की भावनाओं का आदर करते हुये 'गेम बीट योजना' के आदेश को तुरंत निरस्त कर दिया।

दिनांक १८ जून को उदयपुर प्रांत के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्र शास्त्री, प्रदेश की महिला संयोजक किरण जैन, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद जैन, जिला प्रभारी पं. खेमचंद जैन ने मत्स्याखेट पर रोक लगवाने हेतु गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया को फैक्स द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया।

उदयपुर फैडरेशन द्वारा मत्स्य हिंसा के विरोध में चार-पाँच दिन चलाये गये इस अभियान की सफलता पर जैन एवं अजैन सभी अहिंसा प्रेमियों ने फैडरेशन के इस कार्य की दिल से सराहना की।

दान राशि प्राप्त

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्रशिक्षण-शिविर ध्रुव फण्ड हेतु दादा श्री भगवानजी अंदरजी मेघाणी, दादीश्री रतनबाई मेघाणी, पिताजी श्री गुलाबचन्दजी मेघाणी, माताश्री जयागौरी मेघाणी, फैला. चंपाबेन शिवकुवरबा हस्ते भारती उमेश शाह, उमेश के.शाह घाटकोपर, मुम्बई की ओर से २५,०००/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

अनेक स्थानों पर संस्कार शिक्षण-शिविर सम्पन्न

१. मकरोनिया (सागर) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक १५ से १९ जून, ०८ तक पंचदिवसीय शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में प्रतिदिन बाल ब्र.रविन्द्रकुमारजी के समयसार ग्रंथाधिराज की ११ वीं गाथा पर हुये प्रवचन तथा डॉ. योगेशजी अलीगंज द्वारा ली गई परीक्षामुख की कक्षाओं का लाभ मिला। बाल कक्षाओं का कुशल संचालन ब्र. ज्ञानधाराजी तथा ब्र. समताधाराजी उज्जैन ने किया। आपके अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित अभिनयजी शास्त्री कोलकाता, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित चिदानन्दजी अशोकनगर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन श्री अमित जैन, विवेक मोदी व कु.रिचा जैन ने किया। परीक्षामुख ग्रंथ की कण्ठपाठ स्पर्धा के विजेता शिविरार्थियों को पुरस्कार के रूप में जयपुर में आयोजित शिविर हेतु स्लीपर कोच के टिकिट प्रदान किये गये। शिविर में लगभग ६०० शिविरार्थी लाभान्वित हुये। शिविर की सफलता में ट्रस्ट तथा फैडरेशन के सदस्यों के अतिरिक्त श्रीमती चमेली बहनजी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित अरुणकुमारजी मोदी ने किया। **ह्न प्रमोद जैन**

२. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान भवन में २२ से २९ जून, ०८ तक १८ वें ग्रीष्मकालीन बाल व युवा चेतना शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने तत्त्वार्थसूत्र की तथा पं. सहज झांझरी व पं. विरल जैन ने पूजन प्रशिक्षण की कक्षायें ली। बाल व शिशु वर्ग की शिक्षण कक्षायें श्रीमती मेघाजी लुहाड़िया मुम्बई, श्रीमती सुमनजी बड़जात्या एवं श्रीमती अनिताजी कासलीवाल द्वारा ली गईं।

समापन के अवसर पर दिनांक २९ जून को भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शिविर के संचालन में श्री प्रकाशचंदजी पांड्या, श्री मनोजजी कासलीवाल एवं श्री नवलजी दोशी का सक्रिय सहयोग रहा।

३. भोपाल (म. प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन महिला मंडल, मुमुक्षु मंडल एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन, शाखा भोपाल द्वारा दस दिवसीय बाल एवं युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पं. राजमलजी जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र.नन्हेलालजी शास्त्री सागर, पं. अशोकजी उज्जैन, पं.श्रेणिकजी जबलपुर एवं पं.जीवनजी शास्त्री के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ भी मिला। शिविर में लगभग ३५० शिविरार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा में सफल रहे छात्रों को शिविर के संयोजक उमरेशजी सिंघई एवं जितेन्द्रजी सोगाणी द्वारा प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रमों का संचालन फैडरेशन के कार्याध्यक्ष जितेन्द्र सोगाणी ने किया।

4. इन्दौर (म. प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मारवाड़ी मंदिर में श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन परमागम ट्रस्ट साधना नगर एवं श्री दि. जैन मारवाड़ी मंदिर के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 14 जून, 08 तक 10 दिवसीय जैनधर्म शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में श्री इन्द्रजीतजी गंगवाल के हार्दिक आमंत्रण पर पण्डित दिनेशजी शहा एवं डॉ. उज्जवला शहा मुम्बई से पधारे।

शिविर में पण्डित दिनेशजी शहा द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका तथा डॉ. उज्जवलाजी शहा द्वारा 'करणानुयोग परिचय' पुस्तक पर गंभीर चर्चा की गई।

बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

1. **कोलकाता :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पद्मोपुकुर में श्रुत पंचमी के अवसर पर आयोजित आठ दिवसीय शिविर में बाल ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही बाल वर्ग के लिये विशेष रूप से संचालित कक्षाओं में पण्डित मेहुलजी शास्त्री कोलकाता एवं पण्डित सुमतजी शास्त्री टीकमगढ़ ने वीतराग-विज्ञान पाठमाला व बालबोध पाठमाला की कक्षायें ली ।

शिविर के दौरान श्रुत पंचमी पर्व के अवसर पर प्रात: श्रुतपंचमी विधान तथा रात्रि में अनेक तात्त्विक विषयों पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

2. **कानपुर (उ. प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट चौक सराफा, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन एवं अरिहंत महिला मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 8 जून, 08 तक बाल-युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं मंगलायतन के चार छात्र विद्वानों ने बाल कक्षायें ली।

श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर शिविर का समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री प्रकाश जयसवाल उपस्थित थे। इस प्रसंग पर ट्रस्ट द्वारा श्री पवनजी जैन मंगलायतन का सामूहिक अभिनन्दन किया गया। शिविर में लगभग 450 बालक-बालिकाओं ने धर्मलाभ लिया। शिविर पण्डित अनिलकुमारजी 'धवल' भोपाल एवं अमित जैन 'मंगलम' के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

3. **खतौली (उ. प्र.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित एवं युवा फैडरेशन, खतौली द्वारा संचालित जैनत्व बाल संस्कार शिविर का सफल आयोजन दिनांक 3 से 15 जून, 08 तक श्री दिगम्बर जैन मदिर पीसनोपाड़ा में किया गया। शिविर में जयपुर से पधारे पं. अभिषेकजी शास्त्री तथा पं. सोनूजी शास्त्री के तीनों समय कक्षाओं व प्रवचनों का लाभ मिला।

अंत में परीक्षा लेकर प्रथम-द्वितीय स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को विशेष पुरस्कार के अतिरिक्त समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। शिविर में सर्वश्री अमरचंद सुनीलकुमार जैन सर्राफ, प्रवीणकुमार जैन, आभा जैन, राजकुमार जैन, कल्पेन्द्र जैन एवं पवन जैन का विशेष सहयोग रहा।

4. **गुना :** यहाँ श्री वर्द्धमान जिनालय, वीतराग-विज्ञान भवन में अ. भा. जैन युवा एवं महिला फैडरेशन द्वारा दिनांक 6 से 19 जून, 08 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों तथा श्रीमती सुधा जैन उज्जैन, कु. स्वाति शास्त्री जयपुर, पण्डित समकित शास्त्री एवं पण्डित स्वानुभव शास्त्री की कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। आपके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित राजीवजी शास्त्री, श्री मनोज जैन, श्रीमती रेखा जैन, कु. समता जैन, कु. अनुभूति जैन एवं कु. शिल्पा जैन ने भी शिक्षण-कक्षायें ली। शिविर में 435 शिविरार्थियों ने लाभ लिया।

शिविर के मध्य 6 जून को सद्भावना रैली, 8 जून को श्रुत पंचमी पर्व पर विशाल शोभायात्रा एवं 15 जून को विशाल अहिंसा रैली निकाली गई।

सम्पूर्ण आयोजन में शिविर के निर्देशक पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री, परामर्शदाता पण्डित अनिलकुमार शास्त्री, मुमुक्षु मण्डल के सदस्यों, महिला फैडरेशन के सदस्यों व युवा फैडेरशन के सदस्यों का सक्रिय योगदान रहा।

साक्षात्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

नई दिल्ली : यहाँ 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र पर बालिकाओं में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों की अभिवृद्धि हेतु मुमुक्षु समाज के प्रथम ज्ञानाराधना केन्द्र **आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन** का शुभारंभ हो रहा है। इसके प्रथम चरण में दिनांक 1 से 4 जून, 08 तक साक्षात्कार शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में बा. ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना का मार्गदर्शन मिला। विद्यानिकेतन के प्रथम सत्र हेतु सम्पूर्ण देश से 48 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई, जिनमें से 15 छात्राओं का चयन किया गया।

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का भव्य उद्घाटन समारोह रविवार, दिनांक 6 जुलाई, 08 को सम्पूर्ण देश से आमंत्रित मुमुक्षु समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों एवं श्रेष्ठीवर्ग के मध्य सम्पन्न हुआ।

धम्म देशना शिक्षण-शिविर सम्पन्न

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी महापर्व की पावन बेला पर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल महिला मंडल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर लगाया गया 9 दिवसीय धम्मदेशना शिक्षण-शिविर विविध उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में 7 प्रान्तों के लगभग 300 लोगों ने भाग लिया। जिनकी सम्पूर्ण आवास एवं भोजन की व्यवस्था मण्डल एवं फैडरेशन की ओर से नि:शुल्क की गई। इस प्रसंग पर खनियांधाना से पधारी ब्र. अलकाबहन के साथ अन्य बहनों के मार्मिक प्रवचनों को सुनने का लाभ मिला।

शिविर में प्रतिदिन अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। आयोजन में महिला मण्डल, मुमुक्षु मण्डल एवं फैडरेशन के समस्त सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। **ह्न दीपकराज जैन**

अब प्रवचन बाबूभाई हॉल में भी

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक ६ जुलाई, ०८ को सुसज्जित द्वितीय प्रवचन हॉल (पण्डित बाबूभाई मेहता सभागृह) का उद्घाटन समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वप्रथम गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन एवं ब्र. हेमचंदजी 'हेम' का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् बाबूभाई सभागृह में सभा के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का प्रवचन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका मंचासीन थे।

महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने द्वितीय हॉल की सार्थकता बताते हुये कहा कि मुख्य हॉल में प्रवचन का विषय जटिल होने पर उपाध्याय वर्ग के छात्रों को समझने में कठिनाई होती थी तथा विषय की विशेष सरलता होने पर शास्त्री वर्ग के छात्रों को विशेष लाभ नहीं मिल पाता था। अब प्रवचन उनके स्तरानुसार रखे जा सकेंगे। इस व्यवस्था को लागू करने का सर्वाधिक श्रेय ब्र. यशपालजी को जाता है।

साथ ही ब्र. यशपालजी एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस प्रसंग पर ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पं. पीयूषजी शास्त्री, कैलाशजी सेठी, शांतिलालजी, सुरेशजी-अजितजी तोतूका, मोहनलालजी सेठी, निहालचंदजी ओसवाल, स्वरूपचंदजी, महावीरप्रसादजी, हुकमीचंदजी आदि मंचासीन थे। संचालन पं. प्रवीणजी शास्त्री एवं आभार प्रदर्शन पं.धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

जैन युवा फैडरेशन जयपुर के तत्त्वावधान में ह्न

जयपुर में चार शिविरों का आयोजन

1. **मालवीय नगर :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, सैक्टर-7 में दिनांक 10 से 22 जून तक श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा 9 वें बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन प्रात: पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री द्वारा प्रौढ कक्षा तथा पण्डित राजेशजी शास्त्री एवं पण्डित नवीनजी शास्त्री द्वारा बाल कक्षायें संचालित की गईं। शिविर के मध्य फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी सेठी तथा फैडरेशन के केन्द्रीय प्रचार मंत्री पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के विशेष प्रवचन का लाभ मिला। दिनांक 22 जून को रात्रि में आयोजित समापन समारोह में फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन हुआ। सभा का संचालन पण्डित विमलकुमारजी बनेठावालों ने किया।

२. **आदर्शनगर (बीस दुकान) स्थित दि. जैन मंदिर** में फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 20 जून से 30 जून, 08 तक श्रीमती सुलोचना जैन धर्मपत्नी श्री मनोहरलालजी जैन के प्रयत्नों से क्रमबद्ध पर्याय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन रात्रि में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सरल शैली में क्रमबद्धपर्याय की विशेष कक्षा का लाभ मिला।

दिनांक 1 जुलाई को प्रात: समापन समारोह की अध्यक्षता मुलतान जैन समाज के अध्यक्ष श्री बलभद्रजी जैन ने की। मुख्यअतिथि के रूप में पधारे फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन की गतिविधियों के साथ-साथ जैनदर्शन की होम ट्यूशन योजन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने किया। ज्ञातव्य है कि यहाँ विगत छह वर्षों से पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा नियमित महिला कक्षा संचालित की जा रही है।

३. **दि. जैन मंदिर, जनता कॉलोनी** में दिनांक 20 से 30 जून तक तत्त्वार्थसूत्र शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें पण्डित संजीवजी गोधा ने दस दिनों में तत्त्वार्थसूत्र के प्रत्येक अध्याय पर बारिकी से प्रकाश डाला। साथ ही पण्डित राजेशजी शास्त्री द्वारा बच्चों की विशेष कक्षा ली।

शिविर में श्रीमती पुष्पलताजी काला, श्रीमती चन्द्राजी जैन, श्रीमती नीलमजी जैन का विशेष सहयोग रहा। ज्ञातव्य है कि यहाँ पं. राजेशजी विगत 5 वर्षों से रविवारीय पाठशाला चला रहे हैं।

४. **श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर, जौहरी बाजार** में दिनांक 20 से 30 जून तक इष्टोपदेश शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित दीपकजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि उक्त चारों शिविर फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं जिला प्रभारी पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री के निर्देशन एवं संयोजकत्व में सम्पन्न हुये।

आमंत्रण-पत्र/स्वीकृति शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ विद्वान बुलाने हेतु जिन मंदिरों/ मण्डलों ने अपने आमंत्रण अभी तक नहीं भेजे हैं तो शीघ्र भेजें।

जिन विद्वानों ने अपनी स्वीकृति अभी तक नहीं भेजी है, वे शीघ्र भिजवायें, ताकि दशलक्षण पर्व पर विद्वानों को भेजने की व्यवस्था समय रहते सुव्यवस्थित रूप से की जा सके।

श्रुतपंचमी पर्व धूमधाम से मनाया

1. **खतौली (उ. प्र.) :** यहाँ 5 से 8 जून तक श्रुत पंचमी महोत्सव धूम-धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर **सिद्धान्तरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल** जयपुर के प्रतिदिन प्रात: सरल शैली में पूजन की जयमाला व रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् समयसार के कर्त्ताकर्म-अधिकार पर हुये मार्मिक प्रवचनों का समाज ने भरपूर लाभ लिया। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इसी प्रसंग पर प्रतिदिन दोपहर में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा छहढाला की कक्षा ली गई।

इस अवसर पर आयोजित नवलब्धि विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

दिनांक 8 जून को विशाल जिनवाणी शोभायात्रा का आयोजन हुआ। इसके पश्चात् श्री सुभाषचन्द जैन महलकावालों के निवास पर मंगल कलश विराजमान किया गया।

सम्पूर्ण महोत्सव में स्थानीय विद्वान पण्डित सोनूजी शास्त्री, श्री कल्पेन्द्र जैन, श्री नरेन्द्र जैन आदि फैडरेशन के सभी सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा।

२. **कोटा (राज.) :** शिविर के दौरान दिनांक 7 व 8 जून को श्रुत पंचमी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर श्री बालचंदजी पटवारी परिवार की ओर से सरस्वती मंडल विधान आयोजित किया गया। दिनांक 8 जून को भव्य जिन शोभायात्रा निकाली गई, समारोह के झण्डारोहणकर्त्ताश्री वीरेन्द्रकुमार जैन हरसौरा परिवार थे। इस अवसर पर आयोजित श्रुत स्कंध मंडल विधान का आयोजन पंडित जयकुमारजी जैन परिवार की ओर से किया गया।

इस प्रसंग पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं पंडित कमलचंदजी पिड़ावा का मंगल उद्बोधन प्राप्त हुआ साथ ही पंडित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पंडित प्रवीणकुमार जी शास्त्री जयपुर, पंडित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पंडित निखिलकुमारजी शास्त्री कोतमा का समागम भी प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में पंडित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पंडित सुनीलजी 'धवल' एवं श्री कांतिजी इन्दौर के सहयोग से सम्पन्न हुये।

समस्त कार्यक्रमों में पंडित रतनचंदजी चौधरी का सक्रिय सहयोग रहा।

3. **दिलशाद गार्डन, दिल्ली :** यहाँ 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन द्वारा श्रुत पंचमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भव्य जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् झण्डारोहण पूर्वक श्रुतपंचमी पूजन हुई।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर द्वारा श्रुत के अवतार की गौरव गाथा सुनने का अवसर मिला। आपके साथ ही पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, विदुषी राजकुमारीजी सनावद आदि का भी उद्बोधन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने एवं मंच संचालन पण्डित संदीपजी शास्त्री बाँसवाड़ा ने किया।

४. **जयपुर :** यहाँ राजस्थान जैन साहित्य परिषद की ओर से पर्व के अवसर पर तीन दिवसीय विशेष आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत प्रथम दिन राजस्थान चैम्बर भवन में विद्वत्तविचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। द्वितीय दिन श्रुत पंचमी विधान एवं अंतिम दिन विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2008

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 16 अगस्त 2008	1. बालबोध पाठमाला भाग 1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 17 अगस्त 2008	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 18 अगस्त 2008	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।